

बेलारूस स्टेट यूनिवर्सिटी द्वारा प्रोफेसर की मानद उपाधि प्रदान किए जाने के अवसर पर भारत के राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी का स्वीकृति अभिभाषण

मिंस्क, बेलारूस : 03.05.2015

बेलारूस के माननीय शिक्षा मंत्री, श्री एम.ए. झूरावकोव,
बेलारूस राष्ट्रीय विश्व विद्यालय के अध्यक्ष, श्री एस.वी. आब्लामेयको,
इस प्रतिष्ठित राष्ट्रीय विश्व विद्यालय के संकाय सदस्य और शैक्षिक समुदाय के वरिष्ठ सदस्यगण,

वरिष्ठ अतिथिगण,

आज आपके बीच उपस्थित होना वास्तव में एक सौभाग्य की बात है। मैं, उनके सहृदयतापूर्ण शब्दों के लिए अध्यक्ष, श्री एस.वी. आब्लामेयको का धन्यवाद करता हूँ। मैं उनके हार्दिक उद्गारों का प्रत्युत्तर देते हुए तथा आज मुझे प्रदान किए गए उच्च सम्मान के लिए अपना धन्यवाद व्यक्त करते हुए अपनी बात आरंभ करना चाहूंगा।

मैं, इस सद्भावना से अत्यंत अभिभूत हूँ। मैं इसे अपने देश और मेरे प्रति बेलारूस की जनता की गर्मजोशी की अभिव्यक्ति मानता हूँ। इस लिए मैं भारत के राष्ट्रपति के रूप में अपनी क्षमता में, भारत की जनता की ओर से बेलारूस राष्ट्रीय विश्व विद्यालय द्वारा प्रदान की गई प्रोफेसर की मानद उपाधि को अत्यंत सम्मान और वनमता के साथ स्वीकार करता हूँ।

देवो और सज्जनो,

भारत के 114 उच्च शिक्षण संस्थानों के कुलाध्यक्ष के तौर पर, मुझे इस विश्व विद्यालय की यात्रा करके विशेष प्रसन्नता हुई है, जिसने वगत अनेक दशकों के दौरान बेलारूस के उत्कृष्ट उच्च शिक्षा संस्थान के रूप में स्वयं को स्थापित किया है। मुझे ज्ञात है कि बेलारूस राष्ट्रीय विश्व विद्यालय ने विज्ञान, प्रौद्योगिकी और इंजीनियरी तथा चिकित्सा और मानव विज्ञान सहित अनेक शैक्षिक विषयों में शैक्षिक उत्कृष्टता वाले देश के तौर पर बेलारूस की प्रतिष्ठा में उल्लेखनीय योगदान दिया है।

इस विश्व विद्यालय और इसके पूर्व विद्यार्थियों की बौद्धिक क्षमता इस तथ्य से प्रतिबिंबित होती है कि बेलारूस एकेडमी ऑफ साइंसेज के प्रत्येक चार शोधकर्ताओं में से तीन यहां से जाते हैं। वैज्ञानिक ज्ञान और उन्नत शोध के आपके प्रयासों ने इस विश्व विद्यालय को बेलारूस के राष्ट्रीय विकास कार्यक्रमों के केंद्र में स्थापित किया है।

दे वयो और सज्जनो, कसी भारतीय राष्ट्रपति की प्रथम राजकीय यात्रा पर मैं बेलारूस में हूँ। इस लए आपसे मलना तथा बेलारूस के साथ पहले से हमारे ठोस रिश्ते को और अ धक घनिष्ठ बनाने की भारत की गहन रू च को प्रकट करने का अवसर प्राप्त करना मेरा सौभाग्य की बात है।

भारत और बेलारूस के संबंध वगत दो दशकों के दौरान बहुत तेजी से वक सत हुए हैं। हमारे संबंध अब व्यापार और आ र्थक सहयोग, वज्ञान, प्रौद्यो गकी, शक्षा तथा रक्षा सहयोग जैसे अनेक क्षेत्रों में फैले हुए हैं।

हमें, बेलारूस के महामहिम राष्ट्रपति की 1997 और 2007 की भारत की सफल यात्राओं का स्मरण है, जिनसे हमारे संबंधों को प्रोत्साहन मला। मेरी अपनी यात्रा बेलारूस के साथ हमारी साझीदारी को मजबूत बनाने में भारत की गहरी रू च को दर्शाती है। जैसा क आपको वदित है भारत वगत दशक के दौरान 7 प्रतिशत से अ धक की औसत वा र्षक वृ द्ध के साथ वश्व की एक सबसे वशाल अर्थव्यवस्था तथा एक सबसे तेजी से बढ़ रहे बाजार के रूप में उभर रहा है। ऐसे सकारात्मक संकेत हैं जो यह दर्शाते हैं क हम और भी ऊंचे वकास पथ की ओर बढ़ सकते हैं।

मेरा आज प्रातः राष्ट्रपति लुकाशेन्को के साथ अच्छा वचार- वमर्श हुआ है। हमारे वचार- वमर्श से मुझे वश्वास हो गया है क हम अपने द्वपक्षीय संबंधों के वस्तार के लए एक जैसा उत्साह और आकांक्षा रखते हैं। अपने सहयोग को और अ धक बढ़ाने की दृष्टि से हमने भारत-बेलारूस साझीदारी पर एक अत्यंत ठोस और संकेंद्रित खाका जारी कया है। हमें उम्मीद है क हम अपने व्यापार को वर्ष 2020 तक 1बि लयन अमरीकी डॉलर के स्तर तक दुगुना कर सकते हैं। बेलारूस को 'बाजार अर्थव्यवस्था' का दर्जा प्रदान करने का भारत का निर्णय हमारे द्वपक्षीय व्यापार को बढ़ाने तथा अंतरराष्ट्रीय व्यापार संगठनों में बेलारूस की और अ धक भागीदारी को बढ़ाने के लए एक महत्वपूर्ण कदम भी होगा।

इस लए मुझे वश्वास है क बेलारूस के साथ मेरे वचार- वमर्श के दौरान प्राप्त परिणामों और सहमतियों से हमारे संबंधों को भ वष्य में और ऊंचाइयों पर ले जाने में मदद मलेगी।

अपने द्वपक्षीय संबंध को अनेक दिशाओं में घनिष्ठ और व वध बनाते हुए हम वगत वर्षों के दौरान भारत और बेलारूस के बीच के उत्कृष्ट सहयोग को बहुस्तरीय मंच पर और अ धक ठोस बना सकते हैं। प्रमुख अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर हमारे एक समान नजरिए को देखते हुए, मुझे वश्वास है क भारत और बेलारूस आपसी सहयोग और सहमति के माध्यम से अपने-अपने क्षेत्रीय और वैश्विक एजेंडे को और आगे बढ़ाना जारी रख सकते हैं।

मत्रो, भारत अपनी वदेश नीति में शांतिपूर्ण तरीकों के प्रति सदैव वचनबद्ध रहा है और रहेगा। तथा प,हमारे पड़ोस से उत्पन्न आतंकवाद और उग्रवाद भारत और बेलारूस के लए एक प्रमुख

सुरक्षा खतरा बना हुआ है। इस चुनौती के समाधान के लिए सभी देशों के बीच और अधिक सहयोग तथा स्पष्ट उद्देश्य की आवश्यकता है।

वास्तव में, वैश्विक शासन के और अधिक प्रतिनिधित्वकारी और समावेशी संगठनों की आवश्यकता को आज से अधिक, पहले कभी भी अनुभव नहीं किया गया। हम मानव इतिहास के व भन्न दौरों में स्थापित अंतरराष्ट्रीय व्यवस्थाओं के प्रयोग द्वारा 21वीं शताब्दी की गंभीर राजनीतिक, सैन्य, आर्थिक, पारिस्थितिकीय और प्रौद्योगिकीय चुनौतियों का समाधान नहीं कर सकते।

भारत और बेलारूस अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं और संगठनों में वकाशशील राष्ट्रों की बड़ी भूमिका के लिए प्रतिबद्ध हैं। तथापि, इस सच्चाई के बावजूद अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में शक्ति का व्यापक वस्तार हुआ है तथा उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं ने मजबूती से विकास किया है, अंतरराष्ट्रीय निर्णयकरण की प्रकृति और प्रक्रियाओं के बदलाव की दिशा में कम प्रगति हुई है।

उचित समयसीमा के भीतर जरूरी बदलाव लाने के लिए भारत और बेलारूस तथा अन्य समान रुचि वाले देशों के बीच सहयोग अत्यावश्यक होगा। हम संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत की स्थायी सदस्यता तथा एनएसजी की सदस्यता के लिए बेलारूस के समर्थन की सराहना करते हैं।

हमारा संबंध, वास्तव में समस्यारहित है जिसमें और विकास की विशाल संभावनाएं हैं। लोगों के बीच संपर्कों का वस्तार ही देशों के बीच रिश्तों में निरंतर विकास की सर्वोत्तम गारंटी है। यह तथ्य कि आज मेरे साथ एक कैबिनेट मंत्री और भारत की संसद के 4 सदस्य हैं, हमारे दोनों राष्ट्रों के बीच व्यापार और आर्थिक संबंधों को प्रोत्साहित करने तथा जनता के आपसी रिश्तों को घनिष्ठ बनाने के लिए मेरी सरकार द्वारा दिए जा रहे महत्व को दर्शाता है। यद्यपि, हमारे औपचारिक कूटनीतिक संबंधों का इतिहास अपेक्षाकृत छोटा है परंतु भारत और बेलारूस के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान का एक रोचक अतीत है। भारत के राष्ट्रीय कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने 1931 में मंस्क की यात्रा की थी तथा अनेक तत्कालीन अग्रणी प्रबुद्धजनों और साथी लेखकों से मुलाकात की थी। वास्तव में, उनकी कविता की यहां व्यापक प्रशंसा हुई थी। मंस्क के समीप जन्मे संगीतज्ञ निकोलस नाबोकोव ने 1960 के दशक में भारत की यात्रा की थी और वे भारत की संगीत परंपराओं से प्रभावित हुए थे। मुझे विश्वास है कि हमारे दोनों देशों के बीच बहुत से अन्य शैक्षिक, बौद्धिक और सांस्कृतिक संपर्क रहे हैं जो समय के गर्भ में छिपे हुए हैं। अनेक बेलारूसियों ने भारतीय शास्त्रीय नृत्य का अध्ययन किया है और उनमें से कुछ ने दूसरों को प्रशिक्षण देना आरंभ कर दिया है। योग भारतीय संस्कृति का एक अन्य पहलू है जो निरंतर लोकप्रिय होता जा रहा है। मुझे बताया गया है

क भारतीय फिल्मों बेलारूस में लोक प्रय रही हैं: संभवतः इस खूबसूरत देश के शानदार मनोरम स्थल स्वयं में भारतीय फिल्मों की शूटिंग के लए एक पृष्ठभूमि प्रदान कर सकें।

दे वयो और सज्जनो,

आज मेरे कार्यक्रमों के दौरान मुझे इस प्रतिष्ठित विश्व विद्यालय में भारत के राष्ट्रपिता, महात्मा गांधी की एक आवक्ष प्रतिमा स्थापित करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। गांधीजी आज भी अपने गूढ़ दर्शन तथा व्यक्तिगत उदाहरण के जरिए भारत और वास्तव में विश्व के लोगों को प्रेरित कर रहे हैं। आज, जब विश्व हिंसात्मक संघर्ष, आतंक और जनसंख्या के बढ़े पैमाने पर वस्थापन की चुनौतियों का सामना कर रहा है, सत्य और अहिंसा का उनका संदेश आज भी उतना प्रासंगिक है जितना उनके समय में था। इस लए हम शांति के इस दूत की छवि को बेलारूस की जनता के साथ बांटने पर प्रसन्न हैं और हमें यह भी खुशी है कि वे इस वरासत को महत्व देते हैं।

मैं, बेलारूस में भारत के प्रति जनता की सद्भावना देखकर प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ, भारत में भी उनके लए समान सद्भावनाएं हैं। इस लए मैं अपने पर्यटन, सांस्कृतिक, शैक्षिक और जनता के आपसी आदान-प्रदान की विशाल संभावनाओं के प्रति अधिक आश्वस्त हूँ।

विद्वान अध्यापक जी, इन्हीं शब्दों के साथ, आज मुझे प्रदान किए गए सम्मान के लए इस प्रतिष्ठित विश्व विद्यालय के विद्यार्थियों तथा संकाय सदस्यों का मैं धन्यवाद करता हूँ।

मैं, आप सभी को भारत की जनता की हार्दिक शुभकामनाएं भी प्रेषित करता हूँ।

मैं, आप सभी के भावी प्रयासों के सफल होने की कामना करता हूँ।

धन्यवाद!